



इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक विविध जमानत आवेदन संख्या - 2682 /2026

करिया यादव @ कवि यादव

..... आवेदक

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रतिवादी

आवेदक अधिवक्ता

:

काशी नाथ सिंह यादव

प्रतिवादी अधिवक्ता

:

जी.ए.

न्यायालय संख्या - 66

माननीय न्यायमूर्ति कृष्ण पहल

1. लिस्ट में बदलाव किया गया है।
2. आवेदक के अधिवक्ता और राज्य के अधिवक्ता ए.जी.ए. श्री सुनील कुमार को सुना गया और रिकॉर्ड में रखी गई सामग्री को देखा गया।
3. आवेदक मुकदमा अपराध संख्या 222/2025, धारा 103(1), 351(2), 352, 305(a), 3(5) बीएनएस, पुलिस स्टेशन राजातालाब, जिला वाराणसी के तहत, मुकदमा लंबित रहने के दौरान जमानत चाहता है।
4. अभियोजन पक्ष के अनुसार, आवेदक के कहने पर, आवेदक समेत सभी सह-आरोपियों ने सूचना देने वाले के पिता पर हमला किया और उन्हें चोटें पहुंचाई, जिससे उनकी मौत हो गई और 23.9.2025 को रात करीब 9.30 बजे दुकान के काउंटर से 3,600 रुपये लूट लिए।
5. आवेदक के अधिवक्ता ने तर्क दिया है कि आवेदक बिल्कुल निर्दोष है और उसे इस मामले में झूठा फंसाया गया है। प्राथमिकी में लगभग बीस घंटे की देरी हुई है और इस देरी का कोई कारण नहीं बताया गया है।

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



6. आवेदक के अधिवक्ता ने आगे तर्क दिया है कि सभी आरोपियों के खिलाफ आम और कई तरह के आरोप हैं। शुरुआत में आवेदक को उकसाने का काम सौंपा गया था, लेकिन बाद में, सभी सह-आरोपियों ने मृतक पर हमला किया। मृतक को आठ चोटें आई हैं, लेकिन यह पता नहीं चला है कि ये चोटें किसकी थीं। आवेदक की कोई आपराधिक इतिहास नहीं है। आवेदक 10.10.2025 से जेल में बंद है और वह मुकदमे में सहयोग करने के लिए तैयार है। अगर आवेदक को जमानत पर रिहा किया जाता है, तो वह जमानत की आज़ादी का गलत इस्तेमाल नहीं करेगा।

7. विद्वान ए.जी.ए. ने जमानत अर्जी का जोरदार विरोध किया है, लेकिन आवेदक के विद्वान अधिवक्ता की दलीलों पर कोई बहस नहीं हो सकी।

8. मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, पार्टियों के अधिवक्ताओं की दलीलें, रिकॉर्ड में मौजूद सबूत, प्राथमिकी में देरी और सभी आरोपियों के खिलाफ आम और एक जैसे आरोप होने को ध्यान में रखते हुए और मामले के गुण-दोष पर कोई राय व्यक्त किए बिना, पहली नज़र में न्यायालय का मानना है कि आवेदक ने जमानत के लिए मामला बनाया है। बेल एप्लीकेशन मंजूर की जाती है।

9. आवेदक- करिया यादव @ कवि यादव, जो ऊपर बताए गए आपराधिक मामले में शामिल हैं, को संबंधित न्यायालय की संतुष्टि के लिए एक व्यक्तिगत बॉन्ड और उतनी ही रकम के दो जमानतदार देने पर इन शर्तों के साथ जमानत पर रिहा किया जाता है। इसके अलावा, रिहाई आदेश जारी करने से पहले, जमानतदारों को सत्यापन किया जाना चाहिए।

(i) आवेदक जमानत के दौरान सबूतों से छेड़छाड़ नहीं करेगा।

(ii) आवेदक सरकारी गवाहों पर दबाव नहीं डालेगा/डराया-धमकाएगा।

(iii) आवेदक तय तारीख पर विचारण न्यायालय के सामने पेश होगा।

10. ऊपर दी गई किसी भी शर्त का उल्लंघन होने पर, यह जमानत रद्द करने का आधार होगा।

11. यह साफ़ किया जाता है कि आवेदक को जमानत देते समय की गई बातें, गवाहों की गवाही के आधार पर अपनी अलग राय बनाने में विद्वान विचारण न्यायाधीश पर किसी भी तरह से असर नहीं डालेंगी।

(माननीय न्यायमूर्ति कृष्ण पहल)

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



28 जनवरी, 2026

शालिन

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।